

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 13, “इब्रानियों को” उपदेश और प्रचार की कला

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

इस और अगली प्रस्तुति में, हम इब्रानियों के माध्यम से दो स्तरों पर प्रचार पर ध्यान केंद्रित करेंगे। सबसे पहले, इस लेखक द्वारा उपदेशात्मक रणनीतियों का मॉडल बनाया गया है। और दूसरा, इब्रानियों का मुख्य संदेश, जिसकी घोषणा वफादार प्रतिक्रिया को पोषित करने के लिए हमेशा आवश्यक रहती है।

पहला ध्यान इसलिए है क्योंकि इब्रानियों का लेखक एक कुशल प्रचारक था, और हम कुशल प्रचारकों के उपदेशों को देखने के आदी हैं ताकि उनकी रणनीतियों को समझ सकें और शायद अपने स्वयं के प्रचार को बेहतर बनाने के प्रयास में उचित होने पर उन रणनीतियों का अनुकरण करने के बारे में सोच सकें। दूसरा ध्यान इसलिए है क्योंकि इब्रानियों द्वारा घोषित वचन हमारे युग में मण्डलियों में अधिक बार और अधिक व्यापक रूप से घोषित किए जाने के योग्य है। इसलिए सबसे पहले, हम प्रचारक के उदाहरण से सीखने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

अपने उपदेश के शुरुआती दो अध्यायों में वह हमें जो पहली बात सिखाते हैं, वह है हमेशा उन्हें यीशु देना। सभी बयानबाजी का लक्ष्य, जिसमें उपदेश संबंधी बयानबाजी या उपदेश शामिल हैं, श्रोताओं को उस जगह से ले जाना है जहाँ वे हैं, जहाँ वक्ता उन्हें चाहता है। यह दूरी शायद बहुत ज्यादा न हो।

वास्तव में, वक्ता शायद बस यह पुष्टि करना चाहता हो कि श्रोता वहीं रहें जहाँ वे हैं। लेकिन बयानबाजी हमेशा उस दूरी और श्रोताओं को उस अंतिम बिंदु तक लाने के बारे में चिंतित रहती है। बयानबाजी की कला इस बात में निहित है कि कैसे।

हम श्रोताओं को उनके बारे में चिंता करने से लेकर उन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कैसे प्रेरित कर सकते हैं जो हमें लगता है कि उन्हें चिंतित करना चाहिए? हम श्रोताओं को उनके हित में जो कुछ भी लगता है उससे लेकर उन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कैसे प्रेरित कर सकते हैं जो हमें लगता है कि शास्त्र के आधार पर उनके हित में होगा? जब हम भाषण के माध्यम से इस दूरी को पाटने का प्रयास करते हैं, तो हम कहाँ से शुरू करते हैं यह बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है। इब्रानियों के उपदेशक के श्रोताओं की स्थिति को देखते हुए, मैं इस बात से हैरान हूँ कि इस उपदेशक ने कितनी जगहों पर अपना उपदेश शुरू किया होगा लेकिन नहीं किया। वह संबोधित व्यक्ति के पिछले और वर्तमान अनुभवों से शुरू कर सकता था।

मैं जानता हूँ कि आपमें से बहुत से लोगों ने पिछले कुछ सालों में बहुत कुछ सहा है और बहुत कुछ त्याग दिया है। वह उन समस्याओं के लिए मण्डली को डाँटना शुरू कर सकता था जो विकसित हुई हैं। मैंने सुना है कि आपमें से कुछ लोगों ने चर्च आना बंद कर दिया है, और आपमें से बाकी लोग इस बारे में कुछ नहीं कर रहे हैं।

वह जंगल की पीढ़ी जैसी बाइबिल की कहानी से शुरुआत कर सकते थे। अब, इस कहानी की सराहना करने के लिए, हमें इब्रानियों के इतिहास के बारे में कुछ बातें समझने की ज़रूरत है। लेकिन उन्होंने इनमें से किसी भी जगह से शुरुआत नहीं की।

इसके बजाय, वह एक जोरदार घोषणा के साथ शुरू करता है कि कैसे भगवान ने एक बेटे में बात की है, कि यह घोषणा उन आंशिक और टुकड़ों में शब्दों से अलग थी जिन्हें भगवान ने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बोला था, और यह वक्ता उन वफादार, लेकिन तुलनात्मक रूप से काफी साधारण, भगवान के सेवकों से अलग था। दोस्तों, हाल के इतिहास में वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है? ऐसा नहीं है कि आप कठिन समय से गुजर रहे हैं क्योंकि आपके पड़ोसी आपसे नाखुश हैं और आप पर दबाव डाल रहे हैं। यह है कि भगवान, ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान शासक ने भगवान के पुत्र, सृष्टि में भगवान के साथी, ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में भगवान के एजेंट, एक ऐसे प्राणी के माध्यम से उद्धार के बारे में एक निश्चित शब्द कहा है जो भगवान की छाप और छवि को धारण करता है, जिसने बहुत बड़ी व्यक्तिगत कीमत पर कुछ महत्वपूर्ण कार्य पूरा करने के लिए थोड़े समय के लिए देह धारण किया और फिर स्वर्ग में महिमा के दाहिने हाथ पर अपना आसन लेने के लिए दिव्य क्षेत्र में लौट आया।

अब, यह हाल के इतिहास की एक अविश्वसनीय घटना है जिस पर हमें पूरा ध्यान देना चाहिए। और हमारे लेखक यहीं नहीं रुकते। वे श्रोताओं को मसीह की महानता की कल्पना करने के लिए पूरे 10 पद खर्च करते हैं जिसका वे एक बार फिर अनुसरण करते हैं।

उन शास्त्रों को साथ में लाते हुए जो उन्हें परमेश्वर के राज्य में मसीह के स्थान की कल्पना करने में मदद करते हैं, उन्हें उसके चारों ओर आराधना करने वाले स्वर्गदूतों को देखने में मदद करते हैं, और उन्हें उस पुत्र की अपरिवर्तनीय दृढ़ता और विश्वसनीयता को समझने में मदद करते हैं जिसके लिए उन्होंने खुद को समर्पित किया है। और फिर, यह सुझाव देने के बाद कि उन्हें इस पुत्र और उसके संदेश को अपना पूरा और अविभाजित ध्यान और निवेश प्रतिक्रिया में देना चाहिए, वह इस बारे में और बात करता है कि इस पुत्र ने उनके लिए क्या किया है, वह अब उन्हें क्या देने के लिए तैयार है, और वह उन्हें इस सब के माध्यम से कहाँ ले जा रहा है। और इसके साथ, इस उपदेशक ने बयानबाजी में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण चीजें हासिल की हैं।

यहां तक कि उनकी चुनौतियों और उनकी स्थिति में गलत हो रही चीजों के बीच भी, उन्होंने उनका ध्यान वापस यीशु की ओर, दुनिया में परमेश्वर की गतिविधि और मिशन की ओर, इस बेटे में बोलते हुए निर्देशित किया है। उन्होंने विकल्पों के बारे में बात किए बिना उन्हें इस समय एक विकल्प दिया है। समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते रहें और शायद एक समझौता समाधान खोजें जो आपकी गवाही को कुंद कर देगा, आपकी शिष्यता को रोक देगा, आपके चलने में बाधा डालेगा, या मानवीय कहानी के बीच में आपकी मण्डली की कहानी में परमेश्वर के बारे में ध्यान केंद्रित करेगा।

इस पर पूरा ध्यान दें। आगे क्या करना है, इस बारे में सोचते समय इस पर पूरा ध्यान दें। और अपने हालात को उन अवसरों से बदल पाएँ जो आपको परमेश्वर के प्रति प्रतिक्रिया करने और

अपने आप में, अपनी मण्डली में और अपनी गवाही में परमेश्वर के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए मिलते हैं।

और, बेशक, उपदेशक ने इसके अलावा और भी बहुत कुछ किया है। मण्डली की स्थिति विश्वासियों के मन में हानि, चिंता और असुरक्षा के अनुभव को प्रभावित करती है, और यह स्वाभाविक रूप से उन्हें उन समस्याओं को कम करने की दिशा में रणनीति बनाने के लिए प्रेरित करती है। हालाँकि, पुत्र के माध्यम से उद्धार की परमेश्वर की घोषणा की स्थिति, उनके मन में उस जीवन रेखा को मजबूती से थामे रखने की उच्च प्राथमिकता को प्रभावित करती है।

मण्डली की स्थिति उन्हें शक्तिहीन और तिरस्कृत महसूस कराती है, जो मसीह का अनुसरण करने के लिए उनके द्वारा चुने गए मार्ग की बुद्धिमत्ता के बारे में प्रश्न उठाती है। उनकी ओर से यीशु की मृत्यु और आवश्यकता के समय उनके लिए परमेश्वर के अनुग्रह को सुरक्षित करने के लिए परमेश्वर के दाहिने हाथ पर चढ़ने की स्थिति उन्हें मसीह द्वारा दी गई स्वतंत्रता, उनके लिए प्रतीक्षा कर रहे सम्मान की नियति, उनके अस्थायी संकटों के बीच अब सहायता की उपलब्धता की याद दिलाती है। उन्हें यीशु को दिखाकर, उपदेशक ने उन्हें दिखाया है कि उनकी कहानी का अंत सम्मान और महिमा होगा क्योंकि वे प्रभु का अनुसरण करते रहेंगे जो पहले उन संकटों से गुज़रे थे जो वे अब भुगत रहे हैं और फिर हमेशा के लिए सम्मान में प्रवेश किया।

ऐसा करने में, उपदेशक ने उनकी अपनी परिस्थिति से उनकी नज़रें हटा ली हैं, बस इतनी देर के लिए कि उन्हें वह परिप्रेक्ष्य मिल जाए जिसकी उन्हें उस पर वापस लौटने और उसमें दृढ़ रहने के लिए ज़रूरत होगी। इस लेखक के लिए, गीत, टर्न योर आइज़ अपॉन जीसस, एक भावुक पलायनवादी रणनीति का संकेत नहीं देगा। जैसा कि वे इब्रानियों के इन शुरुआती अध्यायों में यीशु को देखते हैं, वे उस महान प्रभु को देखते हैं जिसका सम्मान वे साझा करेंगे और जिसकी सहायता वे पूरे रास्ते में प्राप्त करेंगे, शर्म और शक्तिहीनता की भावनाओं के लिए एक शक्तिशाली उपाय जो उनके पड़ोसी उन पर थोपना चाहते हैं, और जिसके माध्यम से वे इस जीवन शैली और इस सुसमाचार के प्रति विश्वासियों की प्रतिबद्धता को कमज़ोर करने की उम्मीद करते हैं जो उनके अपने जीवन के तरीके को आलोचनात्मक जांच के लिए रखता है।

यीशु को अधिक पूर्ण रूप से देखना और अपनी परिस्थितियों को कुछ समय के लिए थोड़ा और धुंधला देखना, उन परिस्थितियों की ओर लौटने को सशक्त बनाता है, जिन पर विजय पाने के बजाय विजय पाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। और इसलिए, यह उपदेशक हमें जो पहली उपदेशात्मक रणनीति दे सकता है, वह यह होगी कि हम इस प्रश्न पर चिंतन करें कि हमारी मण्डलियों को प्रभु के बारे में क्या देखने की आवश्यकता है, जिसकी हम सेवा करते हैं, ताकि वे अपनी वर्तमान चुनौतियों पर परिप्रेक्ष्य प्राप्त कर सकें, अपनी स्थिति के अवसरों और समस्याओं का ईमानदारी से और शायद परिवर्तनकारी शक्ति और निवेश के साथ जवाब दे सकें? दूसरा सबक जो यह उपदेशक हमें देगा, वह है पवित्रशास्त्र के साथ पल को आकार देना। यह हमें निर्गमन से लेकर संख्याओं तक जंगल की पीढ़ी की कहानी पर उनके चिंतन में उनके तीसरे और चौथे अध्याय में ले जाता है।

जिस तरह से हम उस पल को फ्रेम करते हैं जिसमें मण्डली खुद को पाती है और जिस तरह से हम इसकी चुनौतियों और अवसरों को परिभाषित करते हैं, वह इस बात पर महत्वपूर्ण दबाव डालता है कि वे उस पल में अपनी स्थिति और परिस्थिति को कैसे देखेंगे। इब्रानियों के इस दूसरे प्रमुख खंड में, उपदेशक सांसारिक चिंताओं को ओवरले करने के इस कार्य के लिए एक संसाधन के रूप में एक सावधानीपूर्वक चयनित शास्त्रीय मिसाल को देखता है जो मण्डली की ऊर्जाओं को नष्ट कर देता है और वफादार शिष्यत्व की ओर ले जाता है, एक ऐसे फ्रेम के साथ जो इसके बजाय उन ऊर्जाओं को फिर से केंद्रित करता है और इकट्ठा करता है और ईसाई यात्रा में पूरे दिल से निवेश करने की ओर ले जाता है। जिस तरह से वह इसे देखता है वह वास्तव में चतुर है।

अंतर्निहित कहानी जो इस कैनवास को प्रदान करती है जिसे वह अपनी मण्डली की स्थिति के लिए पृष्ठभूमि के रूप में फैलाएगा, वह संख्या अध्याय 14 से आती है। हालाँकि, भजन 95 के लेखक ने पहले ही उस कहानी का एक उपदेशात्मक अनुप्रयोग बना दिया था, और यह वह अनुप्रयोग है जिसे हमारे प्रचारक ने अपने प्रवेश बिंदु के रूप में चुना है। आज, यदि आप ईश्वर की आवाज़ सुनते हैं, तो विद्रोह के समय की तरह अपने दिलों को कठोर न करें।

भजन 95 में उस परिचित चेतावनी का उपयोग करके और मण्डली की स्थिति के लिए एक व्याख्यात्मक ओवरले के रूप में संख्या 14 का उपयोग करके, उपदेशक फिर से श्रोताओं के लिए प्रश्न उठाता है और उन्हें एक रणनीतिक उत्तर के लिए मार्गदर्शन करने में मदद करता है। इस क्षण में हमारे लिए वास्तविक खतरा क्या है? खतरा यह नहीं है कि जब तक हम अन्य ईसाइयों के साथ घूमते हुए देखे जाते रहेंगे या जब तक हम उन प्रथाओं में शामिल नहीं होंगे जो हर कोई आगे बढ़ने के लिए करता है, तब तक हमारे लिए चीजें कभी बेहतर नहीं होंगी। असली खतरा यह है कि हमारे दिल ईश्वर की आवाज़ के प्रति कठोर हो जाएंगे जो हमें आगे बुला रही है।

हम अब उसके वादों और उसकी सद्भावना और हमें उन वादों के अनुभव में लाने की क्षमता पर विश्वास नहीं करेंगे। हम खुद को आध्यात्मिक काठिन्य से पीड़ित पाएंगे, अविश्वास के दुष्ट दिलों के साथ जो जीवित परमेश्वर से दूर हो जाते हैं, जैसा कि उपदेशक कहते हैं। हमने इब्रानियों की अपनी व्याख्या के दौरान इस कहानी की समीक्षा की है।

प्राचीन इब्रानियों को मिस्र में गुलामी से बचाया गया था, लाल सागर में चमत्कारिक ढंग से मुक्ति दिलाई गई थी, रेगिस्तान में अपनी यात्रा के दौरान उन्हें भोजन और पानी उपलब्ध कराया गया था, और अब वे वादा किए गए देश में प्रवेश करने की दहलीज पर खड़े थे। परमेश्वर की ओर से आदेश था कि आगे बढ़ो और भूमि पर कब्जा करो। इब्रानियों ने कनान में टोह लेने के लिए 12 जासूस भेजे।

दस ने बताया कि निवासी बहुत ताकतवर थे और उनके शहर बहुत मजबूत थे। जोशुआ और कालेब ने देश की अच्छाई के बारे में बात की और अपने साथियों से विश्वास के साथ आगे बढ़ने का आग्रह किया। इब्रानियों ने बहुमत की रिपोर्ट पर विश्वास किया और भगवान को दोषी ठहराया कि उन्होंने उन्हें मिस्र से रेगिस्तान में मरने के लिए बाहर निकाला।

आगे बढ़ने के बजाय, उन्होंने एक नए नेता का चुनाव करने की योजना बनाई जो उन्हें मिस्र वापस ले जाएगा। उनके विद्रोह के जवाब में, परमेश्वर ने वादा किया कि वे सभी वास्तव में रेगिस्तान में मर जाएंगे लेकिन यहोशू और कालेब अपने बच्चों को वादा किए गए देश में ले जाएंगे। जंगल की पीढ़ी को गंभीर हृदय संबंधी समस्याएं थीं।

उन्होंने परमेश्वर की भलाई और शक्ति पर अविश्वास करके अपने दिल की बीमारी को दिखाया, परमेश्वर पर आरोप लगाया कि वह उन्हें नुकसान पहुँचाने के लिए कपटपूर्ण तरीके से काम कर रहा है, न कि परमेश्वर ने जो महान आशीर्वाद का वादा किया था। वे पाप की शक्ति से बहक गए थे। मानवीय विरोध के डर से वे आगे बढ़ने से बचते रहे।

और मिस्र के उबले हुए मांस की तरह मूर्त सुख-सुविधाओं की चाहत, भले ही इसकी कीमत गुलामी ही क्यों न हो, उन्हें वापस जाने के लिए प्रेरित करती है। उनके अविश्वास ने उन्हें परमेश्वर से दूर कर दिया क्योंकि उनके दिल परमेश्वर और वादा किए गए लक्ष्य से दूर हो गए और गुलामी के जीवन द्वारा दी जाने वाली कमतर चीज़ों की ओर लौट गए। अध्याय 4, श्लोक 1 से 13 में, और फिर अध्याय 10, श्लोक 19 से 25 में, उपदेशक इस उदाहरण को मूल श्रोताओं के लिए घर पर ही प्रभावशाली बना देगा।

जंगल की पीढ़ी की तरह, उन्होंने भी ईश्वर की उपस्थिति और प्रावधान का भरपूर आनंद लिया है, क्योंकि वे उस जीवन के आराम और आलिंगन से दूर चले गए थे जिसे वे अपने ईश्वर द्वारा नियुक्त भाग्य की ओर जानते थे। वे भी एक दहलीज पर खड़े थे। उन्हें एक मातृभूमि में प्रवेश का वादा मिला था।

हालाँकि, इस बार, अनंत क्षेत्र में प्रवेश का वादा, यीशु के साथ उनके अग्रदूत के रूप में, जिन्होंने इस दहलीज को पार करने के लिए उन्हें योग्य बनाने के लिए आज्ञाकारिता के एक परिपूर्ण कार्य में अपना जीवन अर्पित किया। जैसे-जैसे वे उस दहलीज को पार करते गए, उन्हें अपने पड़ोसी की निरंतर शत्रुता का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्हें दृढ़ रहने के लिए ईश्वर की निरंतर सहायता भी मिलेगी।

क्या पाप उन्हें यह सोचने के लिए बहकाएगा कि उन्होंने जो खोया है वह परमेश्वर के वादों के लिए चुकाई जाने वाली बहुत बड़ी कीमत है, अगर ये वादे कभी पूरे होते भी? क्या उनके दिल परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते और यीशु की मदद को संजोने से भटक जाएंगे, अपने पड़ोसियों की स्वीकृति और इस दुनिया की वस्तुओं और सुखों का आनंद लेने की लालसा में बदल जाएंगे, विश्वास की कमी और अल्पकालिक मुआवजे की इच्छा से कठोर हो जाएंगे? कुछ दिल कठोर हो गए हैं, समाज की राय और शत्रुता को परमेश्वर से ज़्यादा मानते हैं जिसने उन्हें एक अडिग राज्य का वादा किया था, ठीक उसी समय अपनी प्रतिबद्धता में डगमगा रहे हैं जब वे जो वादा किया गया था उसे पाने के पहले से कहीं ज़्यादा करीब थे। उनके साथियों में से कुछ ने पहले ही मिस्र की ओर वापस यात्रा शुरू कर दी है। इन लोगों ने अपने साथी ईसाइयों से मिलना बंद कर दिया है, उन जगहों और उन संगति से पीछे हट गए हैं जिन्हें उनके अविश्वासी पड़ोसी अस्वीकार्य मानते थे।

उपदेशक ने अपने चयन में अत्यंत सावधानी बरती है कि किस धर्मशास्त्रीय प्रसंग को उस स्थिति के अनुरूप प्रस्तुत किया जाए जिसमें उसकी मंडली खुद को पाती है। यहाँ एक गलत विकल्प ने उसके उपदेश को पूरी तरह से कमजोर कर दिया होता। उदाहरण के लिए, श्रोताओं को दहलीज पर नहीं बल्कि एक शुरुआती द्वार पर चित्रित करने का क्या प्रभाव होता? दहलीज का मानसिक ढांचा विकल्पों की स्पष्टता को रेखांकित करता है।

परमेश्वर जो वादा करता है उसे चुनें और आगे बढ़ें, कीमत चुकाने के लिए तैयार रहें, या बीच में ही रुक जाएँ, पीछे मुड़ें और उस जीवन में वापस लौट जाएँ जहाँ से परमेश्वर आपको बुला रहा था, उन लोगों की गोद में जिनके दृष्टिकोण में पहले कभी विश्वास की वजह से तेज़ी नहीं आई थी। मानसिक ढांचा उस मुद्दे को पुष्ट करता है जिसे उपदेशक चाहता है कि मण्डली उनके लिए संबोधित करने के लिए मुख्य मुद्दे के रूप में देखे। क्या वे पीछे हटेंगे या परमेश्वर पर भरोसा दिखाएँगे? और यह इस तरह से होता है कि दृढ़ता न केवल संभव है बल्कि वास्तव में, एकमात्र समझदारी भरा विकल्प है।

यात्रा का कठिन हिस्सा उनके पीछे रह गया है, और वे अपने वादा किए गए वतन की कगार पर खड़े हैं। इस मुकाम तक पहुँचने के लिए उन्होंने पहले ही बहुत कुछ निवेश कर दिया है। निश्चित रूप से, थोड़ा और निवेश करना समझदारी है और इस तरह वादा किए गए इनाम तक पहुँचना है।

उपदेशक ने अध्याय 10, श्लोक 35 में इसे स्पष्ट किया है। यह तर्क दिया जा सकता है कि उपदेशक ने यहाँ थोड़ा हेरफेर किया है क्योंकि यह बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं है कि किस अर्थ में मण्डली वास्तव में ऐसी दहलीज पर थी। मसीह उन्हें स्वर्गीय परम पवित्र स्थान में ले जाने के लिए वर्ष के भीतर वापस नहीं आया।

वे, पूरी संभावना के साथ, उस उत्पीड़न का शिकार नहीं हुए जो उन्हें असमय उस दहलीज पर ले गया। उन्हें वर्षों तक दृढ़ रहना पड़ा। यहां तक कि दशकों तक, स्वर्गीय मातृभूमि, वादा किए गए देश को देखे बिना।

हालाँकि, मेरा मानना है कि उपदेशक ने इस कहानी और सद्भावना के साथ एक दहलीज पर खड़े होने की इस मानसिक स्थिति को लागू किया। उसने महसूस किया कि वे वास्तव में ईश्वर और एक-दूसरे के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में एक दहलीज पर खड़े थे। वास्तव में, हर दिन, हार मानने के प्रलोभनों और दबावों के बीच, उन्हें एक नई दहलीज के साथ निर्णय लेना पड़ता था।

क्या हम विश्वास में ईश्वर के भविष्य में आगे बढ़ते रहेंगे? या हम पीछे छोड़ी गई ज़िंदगी और संगति को लालसा से देखेंगे? फिर से, दहलीज की मानसिक रूपरेखा और दहलीज पर खुद को प्रस्तुत करने वाले स्पष्ट विकल्प एक मण्डली के दृष्टिकोण को उनकी स्थिति के बारे में फिर से परिभाषित करते हैं और उन पर सवाल थोपते हैं। आप वास्तव में किसके लिए खड़े हैं? आप वास्तव में क्या हैं? क्या आप ईश्वर और ईश्वर के वादों के लिए हैं? या आप दुनिया और उसके वादों से मिलने वाले आराम, सुरक्षा और पुष्टि के लिए हैं? जैसे ही कोई व्यक्ति उस प्रश्न का उत्तर देता है और किसी भी दिशा में एक कदम बढ़ाता है, तो वह निश्चित रूप से अपने आध्यात्मिक मार्ग में

एक दहलीज पार कर चुका होता है। और इसलिए दूसरी रणनीति जो यह उपदेशक हमें सुझाएगा वह यह है कि हम अपनी मण्डली की स्थिति पर गहराई से विचार करें, इस प्रश्न पर स्वर्ग से दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करें, और फिर पवित्र शास्त्र की पवित्र परम्परा से कहानियों और छवियों का रणनीतिक रूप से उपयोग करें ताकि इस संसार में और मण्डली के बीच परमेश्वर के मिशन के संदर्भ में इस समय वास्तविक चुनौती को उजागर किया जा सके, तथा मण्डली को उस प्रतिक्रिया को देखने के लिए प्रेरित किया जा सके जो परमेश्वर के वचन में विश्वास और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता को सबसे उचित, लाभप्रद मार्ग के रूप में प्रकट करती है।

तीसरी रणनीति जो लेखक हमारे सामने प्रस्तुत करता है वह है हमारी मण्डली को जवाबदेह ठहराना। हम इसे विशेष रूप से इब्रानियों अध्याय 5, पद 11 से अध्याय 6:20 तक देखते हैं। इसे अक्सर उनके तर्क में विषयांतर कहा जाता है, लेकिन यह वास्तव में उनके उपदेश के बीच में एक तरह की चेतावनी है।

इस तीसरे खंड में, इस तीसरे कदम में, उपदेशक अपने उपदेश की आगे की गति से विराम लेता है ताकि अपनी मंडली को जवाबदेह ठहरा सके, अधिक ध्यान दे सके, और खुद पर अधिक निवेश कर सके। वह उन्हें बहुत साहसपूर्वक बताता है कि वह उनसे आध्यात्मिक परिपक्वता से पैदा हुई महान चीजों की अपेक्षा करता है। वह उन्हें ईश्वर के उपहारों के लिए ईश्वर के प्रति उनकी जवाबदेही की भी याद दिलाता है।

अध्याय 5, श्लोक 11 से 14 में, हम एक उपदेशक को सुनते हैं जो अपनी मण्डली को ईसाई शिक्षा के उस मापदंड पर खरा उतरने के लिए चुनौती देने में संकोच नहीं करता था जो उन्हें प्राप्त हुआ था। उपदेशक के अनुमान में, उनमें से कई लोगों को मण्डली के भीतर ईसाई नेतृत्व में सक्रिय रूप से लगे रहना चाहिए था, कम परिपक्व और डगमगाने वाले लोगों के विश्वास और आशा को मजबूत करना चाहिए था, दोहरी सोच वाले लोगों का पीछा करना चाहिए था, जैसे चरवाहे झुंड से दूर जाने वाली भेड़ों की तलाश करते हैं, बजाय इसके कि वे खुद गूंगी भेड़ों की तरह अपने काम पर ध्यान दें। प्रेरित पौलुस ने भी फिलिप्पी में अपने पाठकों को इसी तरह चुनौती दी।

भले ही हम पूर्ण या परिपक्व न हों, लेकिन कम से कम हमें जो हासिल हुआ है, उसके अनुरूप तो रहना चाहिए। इस बिंदु पर जोर दिए जाने से कई विश्वासियों को लाभ हो सकता है। क्या वे अपने होठों से या अपने दिमाग में जो स्वीकार करते हैं, उसके अनुसार जीते हैं कि इस अस्थायी दुनिया में हमारे अस्तित्व का सत्य यही है? क्या वे अपने बपतिस्मा या पुष्टिकरण के समय की गई प्रतिज्ञाओं पर खरे उतरते हैं? क्या हम दूसरों के बपतिस्मा या हमारी मण्डली में दूसरों के स्वागत के समय किए गए वादों पर खरे उतरते हैं, अर्थात् उन्हें उस विश्वास में पोषित और प्रोत्साहित करना जिसे उन्होंने अपनाया है या यदि वे शिशुओं के रूप में बपतिस्मा लेते हैं और वास्तव में सहायक और पोषण करने वाली मण्डली में बड़े होते हैं, तो वे अपनाते के लिए प्रेरित होंगे? यदि हमारी मण्डलियाँ इन प्रतिज्ञाओं पर खरी उतरती हैं, तो हमारे कलीसियाओं में आध्यात्मिक वातावरण का क्या होगा? यदि हम लगातार यह अपेक्षा करते हैं कि इन प्रतिज्ञाओं पर खरी उतरी जाएँगी, तो क्या हम वास्तव में अपने लोगों से यह अपेक्षा करेंगे कि वे इनका पालन करें और मण्डली में अपना आत्म-सम्मान पाएँ, जब तक कि वे इन प्रतिज्ञाओं के प्रति सच्चे रहने में खुद को

समर्पित न कर दें? क्या हम अपनी मण्डलियों को परिपक्वता और शिष्यत्व के लिए प्रेरित करते रहते हैं, कि वे इब्रानियों के प्रचारक की तरह पूर्णता या परिपक्वता के लिए जन्म लें? क्या हम उन्हें हमेशा जागरूक रहने में मदद करते हैं कि बपतिस्मा, धर्म परिवर्तन, पुष्टिकरण, या चर्च में शामिल होना कायापलट की एक महान चल रही प्रक्रिया का अंतिम चरण है, जो उन्हें मसीह के समान बनने की ओर अधिक से अधिक प्रेरित करता है और उन्हें उस यात्रा में एक-दूसरे की सहायता करने के लिए अधिक जिम्मेदारी लेने के लिए बुलाता है? यकीनन, हम केवल वही जानते हैं जो हम जीने के लिए तैयार हैं, और हम केवल तभी किसी चीज़ को सच मानते हैं जब हम उस सत्य के अनुसार कार्य करने और अपना मार्ग निर्धारित करने के लिए कदम उठाते हैं।

इब्रानियों 5:11 से 14 हमें इस मुद्दे पर चुनौती दे सकते हैं, हममें से उन लोगों को प्रेरित करते हुए जिन्होंने विश्वास में वर्षों या दशकों तक समय बिताया है, शिक्षकों के रूप में हमारी स्थिति और जिम्मेदारी को स्वीकार करने के लिए, यानी, जो ईसाई जीवन शैली का मॉडल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, जो हम जानते हैं उसके अनुसार जीते हैं, और दूसरों को उस मार्ग पर अधिक तत्परता और पूरे दिल से चलने के लिए प्रोत्साहित, प्रोत्साहित और चुनौती देते हैं। उपदेशक अपनी मण्डली से आध्यात्मिक परिपक्वता से पैदा हुई महान चीज़ों की अपेक्षा करता है। वह उन्हें परमेश्वर से प्राप्त अनुग्रह के लिए भी जवाबदेह ठहराता है।

हम पहले ही इस विषय पर पिछले सत्र में विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। इसलिए यहाँ, यह कहना पर्याप्त है कि उपदेशक हमें दिए गए कीमती अनुग्रह के लिए कीमती कृतज्ञता की अपेक्षा का भी उदाहरण प्रस्तुत करता है। ऐसा करके, वह अपने श्रोताओं की उन उपहारों के प्रति जागरूकता और प्रशंसा को बढ़ाता है जो उन्हें प्राप्त हुए हैं और उन विशेषाधिकारों और अनुग्रहों के लिए जो वे वर्तमान में प्राप्त कर रहे हैं।

ईश्वर की कृपा का उनका अनुभव उनके अपने अनुभव और उनकी अपनी चेतना में आनुपातिक रूप से अधिक वास्तविक हो जाता है क्योंकि एक आभारी प्रतिक्रिया बनाने और बनाए रखने में उनका निवेश बढ़ता है। इन उपहारों और विशेषाधिकारों के बारे में जागरूकता कृतज्ञता का एक कुआँ बन जाती है, जो गवाही, ईसाई प्रतिबद्धता और सेवा और आउटरीच के कार्यों की नई नदियों में बदल जाती है। तो तीसरी उपदेशात्मक रणनीति जो हमारे उपदेशक हमें सुझाते हैं वह यह है।

मण्डली को बताएँ कि आप उनसे आध्यात्मिक परिपक्वता से पैदा हुई महान चीज़ों की अपेक्षा करते हैं। उन्हें परमेश्वर से प्राप्त अनुग्रह के लिए परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी ठहराएँ। चौथी उपदेशात्मक रणनीति जो इस उपदेशक ने प्रस्तुत की है, सरल है।

इसे सारगर्भित बनाइए। यह उपदेशक कोई कमज़ोर नहीं है। वह एक कठिन धार्मिक प्रश्न का उत्तर साझा करने के लिए चार पूरे अध्याय समर्पित करता है।

हम कैसे आश्चस्त हो सकते हैं कि यीशु की मृत्यु ने वास्तव में परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में बदलाव लाया, खासकर जब पवित्र शास्त्रों में मानव बलि के बारे में कुछ नहीं कहा गया है जो परमेश्वर को स्वीकार्य है? या क्या शिविर के बाहर एक क्रॉस यरूशलेम में वेदी की तुलना में

प्रायश्चित के बेहतर दिन के लिए अधिक उपयुक्त वेदी बनाता है? यह उपदेशक केवल कठिन प्रश्न नहीं पूछता और फिर उनके बारे में टाल-मटोल करता है। उसने पवित्र ग्रंथों और प्राचीन अनुष्ठानों को वास्तव में गहराई से समझने, कठिनाइयों को पहचानने और उनसे निपटने, और एक उत्तर तैयार करने के लिए समय लिया है जो इस मुद्दे के बारे में उचित आश्वासन के लिए आधार प्रदान करता है और इसलिए, यीशु के इस धर्मशास्त्र के आसपास निर्मित जीवन शैली में निरंतर निवेश के लिए आधार प्रदान करता है। इब्रानियों को बनाने वाले उपदेशक ने अन्य पादरियों को चर्च में प्राथमिक धर्मशास्त्रियों, नैतिकतावादियों और बाइबिल के व्याख्याकारों, पवित्र परंपरा के प्रवक्ताओं के रूप में अपने काम में वचन की सेवकाई में समय और ऊर्जा का निवेश करने की चुनौती दी है।

हर हफ्ते पादरियों से 100 अपेक्षाएँ होती हैं। आपके विशेष परिवेश में या हमारे साझा परिवेश में लोगों के सामने आने वाले कठिन सवालों के बारे में पढ़ने, चिंतन करने और धर्मशास्त्रीय रूप से सोचने में अधिक समय न लगाने के लिए 100 बहाने हैं। यदि प्रशासनिक कार्य में कुछ कमी आती है, तो संभवतः स्टाफ पैरिश रिलेशन कमेटियों या वार्षिक रिपोर्ट के पाठकों से बहुत अधिक पुष्टि नहीं मिलती है, क्योंकि आप वचन की सेवकाई को बहुत गंभीरता से ले रहे हैं और पैरिशवासियों को इस दुनिया में उनके खंडित जीवन के टुकड़ों के साथ पवित्र परंपरा के टुकड़ों को वास्तव में सुसंगत, जिम्मेदार, यहां तक कि गहन तरीके से जोड़ने में मदद करने की कोशिश कर रहे हैं।

और फिर भी, यह मास्टर उपदेशक हमें चुनौती देता है कि यह वास्तव में, उपदेशकों के रूप में हमारा काम है, हमारे काम का एक अनिवार्य हिस्सा है, हमारे दायित्व का एक पहलू है जिसे हर कीमत पर व्यस्त पादरी सिंड्रोम के हमले से सुरक्षित रखा जाना चाहिए। उपदेशात्मक उत्कृष्टता के लिए उनकी चौथी सलाह यह होगी। कठिन और चुनौतीपूर्ण सवालों में खुद को न उलझाएँ, सवाल जो हमारे द्वारा घोषित विश्वास की सुसंगतता और व्यवहार्यता से संबंधित हैं, साथ ही ऐसे सवाल जो जीवन जीने और उस विश्वास के अनुरूप प्रतिक्रियाओं को समझने से संबंधित हैं।

उन उत्तरों के लिए धर्मग्रंथों और ईसाई चर्च की विरासत को खंगालने के कठोर काम से पीछे न हटें जो यह आश्वासन देते हैं कि हमारी आशा वास्तविक है। कठोर काम से पीछे न हटें जो इस आश्वासन की ओर ले जाता है कि ईश्वर है और करता है, जैसा कि हमारा विश्वास ईश्वर को होने और करने की घोषणा करता है, और यह कि हम जिन प्रतिक्रियाओं का आग्रह कर रहे हैं वे वास्तव में वही प्रतिक्रियाएं हैं जिन्हें ईश्वर चाहता है। इस उपदेशक ने अधिकांश स्टाफ पैरिश रिलेशन कमेटी के सदस्यों से बेहतर समझा कि शिष्यत्व और मिशन में कट्टरपंथी, लगातार विवेक के आधार के रूप में धर्मशास्त्रीय समझ की गहराई बिल्कुल आवश्यक है।

लेकिन जितना अधिक हम अपने चर्चों में इस नींव पर ध्यान देंगे, और जितना अधिक समिति के सदस्य चर्च के सदस्यों के जीवन में और अपने स्वयं के जीवन में इसके फल देखेंगे, उतना ही अधिक, शायद, हम उन्हें जीत लेंगे। और अंतिम सबक जो यह उपदेशक हमें उपदेश देने वालों को देगा, वह है उत्कृष्टता के लिए मण्डली के जुनून को मुक्त करना। यह उनके उपदेश के अध्याय 11, 12 और 13 में मुख्य रूप से सामने आता है।

यह उपदेशक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करता है। वह जानता है कि लोगों में उत्कृष्टता के लिए जुनून होता है या कम से कम उन्हें ऐसे जुनून की ओर प्रेरित किया जा सकता है। वह उन लोगों के साथ प्रतिध्वनित होता है जो सम्मान और आत्म-सम्मान प्राप्त करना चाहते हैं और जो अपने जीवन में महान चीजें हासिल करना चाहते हैं।

वह उत्कृष्टता के लिए मण्डली के जुनून को मुक्त करता है, न कि उसे बंद करने की कोशिश करता है, क्योंकि कुछ मामलों में, वह जुनून गैर-ईसाई समाज के भीतर रखे गए मॉडल के अनुसार सफलता की ओर गलत दिशा में जा सकता है। इसके बजाय, यह उपदेशक निराश और अपमानित लोगों को अपनी महत्वाकांक्षाओं के प्रति और भी अधिक जागृत होने के लिए प्रोत्साहित करता है, लेकिन ऐसा ईश्वर की दिशा में और स्वर्ग की प्रशंसा के उद्देश्य से करना चाहिए। कई दशक पहले, लाइफस्टाइल्स ऑफ द रिच एंड फेमस नामक एक लोकप्रिय शो था।

मेरे अपने दादा-दादी इसे ईमानदारी से देखते थे, और मैं अक्सर उनके साथ इसे देखता था। हम आलीशान हवेलियों का दौरा करते, मशहूर लोगों के निजी जीवन में झाँकते, और कथावाचक द्वारा अच्छे जीवन के रूप में प्रशंसा की गई बातों के बारे में सुनते। ऐसे लोगों ने वास्तव में अपने जीवन में कुछ हासिल किया था।

मैं उनकी प्रशंसा करते हुए बड़ा हुआ और उनका अनुकरण करना चाहता था और उसी सफलता का आनंद लेना चाहता था। लेकिन क्रूस पर चढ़ाए गए उद्धारकर्ता, जिनकी समानता में ईसाइयों को बढ़ने की उम्मीद करनी चाहिए, उस प्राइमटाइम शो में कभी नहीं दिखाए गए होंगे। ईश्वर के राज्य में महान होने और ईश्वर की सेवा करने के लिए स्वतंत्र होने के लिए, किसी को ऐसे शो में दिखाए गए मूल्यों को त्यागना होगा।

और जैसा कि हमने देखा, उपदेशक पूरे उपदेश में इस समस्या से सीधे निपटता है, जिसे हम इब्रानियों के लिए पत्र कहते हैं। उसी समय, उपदेशक अपनी मंडली को एक और शो, द लाइफस्टाइल्स ऑफ द रिच टूवर्ड गॉड देखने के लिए आमंत्रित करता है। इब्रानियों 11, पवित्र इतिहास में उच्च उपलब्धियों वाले लोगों की परेड के साथ, उनके पूर्व जुनून में मंडली के स्वयं के उदाहरण से पहले और अध्याय 12 में यीशु के उदाहरण द्वारा परिपूर्ण, जो इस तरह के शो के लिए एक तरह की आशा और एक तरह का सीज़न समापन प्रदान करता है।

इन लोगों ने अपना नाम केवल प्रत्यक्ष सफलता प्राप्त करके या धन संचय करके या सांसारिक शक्ति की सीढ़ियाँ चढ़कर नहीं बनाया, बल्कि ईश्वर के बताए मार्ग पर चलकर, ईश्वर द्वारा उनकी आत्मा में निहित महान दर्शन का निर्भयतापूर्वक अनुसरण करके बनाया, भले ही इसका अर्थ इस संसार में पद और स्थान के सभी दावों को त्यागना ही क्यों न हो। ऐसे लोगों, अब्राहम, मूसा, शहीदों और हाशिए पर पड़े लोगों और स्वयं यीशु द्वारा किए गए चुनाव हमें सिखाते हैं कि यीशु का अनुसरण करने पर हम पर आने वाला अपमान भी उन लोगों के सम्मान से अधिक मूल्यवान है जो ईश्वर से अलग हो गए हैं। इस उपदेशक के धर्मशास्त्र में समृद्धि के सुसमाचार के लिए कोई स्थान नहीं है, क्योंकि समृद्धि अक्सर नैतिकता और इस संसार के मूल्यों के साथ समायोजन से आती है, न ही अपने आप में पीड़ा का महिमामंडन होता है।

महानता केवल ईश्वर के प्रति वफादार रहने और उस रिश्ते को बनाए रखने वाले मार्ग पर चलने से आती है, चाहे वह जीत और उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए हो, जिसकी प्रशंसा करने से अविश्वासी भी खुद को रोक नहीं पाते, या समाज की चकाचौंध से दूर जीवन जीने के लिए, यहाँ तक कि वंचना, अवमानना और उपहास का पात्र बनने के लिए भी। ऐसे लोगों के उदाहरण जो विश्वास से जीते हैं, जो अस्थायी पुरस्कारों की तुच्छ खोज से हटकर धार्मिकता के शांतिपूर्ण फल की खोज में लग गए हैं, उन्हें अनंत बार बढ़ाया जा सकता है और बढ़ाया जाना चाहिए। यदि इब्रानियों के लेखक ने अपने मण्डली को दर्शकों की इस भीड़ से घेरना मददगार पाया, तो हम भी अपने और अपने साथी विश्वासियों को ऐसे लोगों के एक निरंतर बढ़ते बादल से घेरने से लाभान्वित हो सकते हैं जिनका विश्वास हमारे साझा लक्ष्य की वास्तविकता की गवाही देता है और जिनके जीवन के विकल्प हमारी महत्वाकांक्षा को पवित्र दिशाओं में जगा सकते हैं।

ऐसा प्रयास और भी ज़रूरी है क्योंकि हमारे आस-पास की दूसरी आवाज़ें, चाहे वे मीडिया की आवाज़ें हों या आसानी से प्रभावित होने वाले परिचितों की, हमारे आस-पास के स्टैंडों को दूसरे तरह के उदाहरणों से भर देना चाहती हैं, यानी वे जो हमारे समाज द्वारा सफलता के मूल्यांकन के दौरान सफलता की कहानियाँ हैं। इब्रानियों के लेखक बताते हैं कि वीरता की ईश्वरीय छवि बनाना कितना महत्वपूर्ण है। जिन लोगों की हम प्रशंसा करते हैं या ईर्ष्या करते हैं, उनके लिए हम अनुकरण करना चाहते हैं।

हम उन मूल्यों और महत्वाकांक्षाओं को आत्मसात करने की इच्छा से खुद को नहीं रोक पाते हैं, जिन्होंने नायक को सफलता और गौरव दिलाया। इसलिए सही दौड़ में भाग लेने के लिए उन नायकों को सही तरीके से चुनना बहुत ज़रूरी है। क्या हम उन लोगों की प्रशंसा करते हैं जो एक फ़िल्म के लिए 20 मिलियन डॉलर कमाते हैं? या हम उन लोगों की प्रशंसा करते हैं जो गुमनामी में रहकर लोगों की ज़िंदगी संवारते हैं या अंदरूनी शहरों में बच्चों को सलाह देते हैं? क्या हम सिलिकॉन वैली के दिग्गजों से प्रभावित हैं? या हम उन उद्यमियों से प्रभावित हैं जो गरीबों, बीमारों और बदसूरत लोगों की सेवा करते हैं? क्या हम पेशेवर एथलीटों के करियर या उन लोगों की चालों को दिलचस्पी से देखते हैं, जो यीशु मसीह में विश्वास की गवाही देने के कारण जेल में बंद हैं? इसलिए, हमारे लिए यह उपयोगी होगा कि हम अपने आस-पास खुद को सफल लोगों के उदाहरणों के बजाय विश्वास के उदाहरणों से घेरें, अमीर और मशहूर लोगों की जीवनशैली से दूर रहें और अमीर लोगों की ईश्वर की ओर देखने वाली जीवनशैली को देखें।

ईसाई चर्च का इतिहास आस्था के शानदार उदाहरणों से भरा पड़ा है। लेकिन हमें अपनी वर्तमान पीढ़ी से आगे जाकर उन लोगों को खोजने की ज़रूरत नहीं है, जिनकी आस्था के लिए लड़ाई ने ईश्वर के प्रति हमारे जुनून को फिर से जगा दिया है। आयरन कर्टन के पीछे से बचे हुए लोगों और शहीदों में, या दक्षिण-पूर्व एशिया में, या उत्तरी भारत में गवाहों का एक बड़ा समूह पाया जा सकता है।

उपदेशक अपने स्वयं के उदाहरण से हमें उनकी कहानियाँ सुनाने, हमारी मण्डली की आँखों के सामने परमेश्वर की नज़र में महानता के दर्शन रखने का आग्रह कर सकता है ताकि पवित्र आत्मा पवित्र महत्वाकांक्षाओं को जगा सके। उपदेशक अपने उपदेश में जीवन और उसकी चुनौतियों के लिए कई छवियों का उपयोग करता है जो श्रोताओं को उन चुनौतियों की ओर इस तरह से

उन्मुख करती हैं जो पूरे दिल से और मेहनती जुड़ाव को बढ़ावा देती हैं, और इस तरह उन चुनौतियों पर जीत को बढ़ावा देती हैं। उदाहरण के लिए, जीवन एक महान प्रतियोगिता है जिसमें हमें प्रतिस्पर्धा करने और जीतने के लिए बुलाया जाता है।

यह एक ऐसी प्रतियोगिता है जिसमें कई लोग पहले भी सफलतापूर्वक भाग ले चुके हैं, और अब वे हमारी अपनी दौड़ या हमारे अपने कुशती मैच को स्वर्गीय स्टेड से देखते हैं, जिसमें वे अपनी जीत के बाद से गुजर चुके हैं। जीवन एक प्रतियोगिता है जो उन लोगों के लिए अनन्त पुरस्कार प्रदान करती है जो अंत तक दृढ़ रहते हैं, जो खुद को पूरी तरह से शिष्यत्व, गवाही और सेवा में लगाते हैं, और जो अच्छी तरह से दौड़ते हैं। जीवन एक रचनात्मक अनुभव भी है जिसमें ईश्वर हमारे चरित्र को आकार देता है और विशेष गुणों का पोषण करता है, ईश्वर के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का अभ्यास करता है और हमारी महत्वाकांक्षाओं को परिष्कृत करता है ताकि हमारा दिल पूरी तरह से ईश्वर और ईश्वर के वादों पर केंद्रित हो, यह सब हमें बड़प्पन से लैस करने और हमें एक शानदार नियति के लिए तैयार करने के उद्देश्य से है।

प्रशिक्षण के इस उदाहरण का उपयोग करते हुए, इब्रानियों के लेखक ने मण्डली को शर्मिंदा करने के समाज के प्रयासों को परमेश्वर के प्रयासों में बदल दिया है, जिसके परिणामस्वरूप विश्वासियों की महत्वाकांक्षाएँ उनके पड़ोसियों द्वारा शिष्यत्व से उन्हें रोकने के प्रयासों के माध्यम से सहन करने, संलग्न होने और दृढ़ रहने पर आधारित हो सकती हैं, जिससे समाज के उन प्रयासों के लक्ष्यों को उनके सिर पर रख दिया जाता है। ईसाई जीवन एक रोमांचक सवारी है। यह जयकार करने वाली भीड़ के सामने एक चरमोत्कर्ष खेल में मैदान पर होने जैसा है।

यह अनंत काल के व्यवसाय के लिए एक प्रशिक्षण अभ्यास की तरह है। यह हमारी सांसारिक तैयारी और करियर में किसी भी चीज़ के बारे में उत्साहित होने की तुलना में अधिक और अधिक स्थायी प्रसिद्धि और सफलता का मार्ग है। इब्रानियों के उपदेशक हमें अपने स्वयं के उपदेश में इस उत्साह को व्यक्त करने, हमारी मण्डली की महत्वाकांक्षाओं और महानता की प्यास को जगाने, उन्हें बाहर भेजने, उनके जीवन में वापस आने के लिए चुनौती देते हैं ताकि वे पवित्रता के लिए महान प्रतियोगिता में भाग ले सकें, स्वयं ईश्वर के हाथों से विजेता का ताज प्राप्त कर सकें।